

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
आमुखम्	iii
पुरोवाक्	iv-vi
अनुक्रमणिका	vii
प्रथम अध्याय - कथा का स्वरूप एवं परम्परा	१-४४
१.० भारतीय कथा का युग संचरण	१
१.१ आधुनिक संस्कृत कहानी का उदय	७
१.२ स्वाधीनता पूर्व संस्कृत कथा साहित्य	८
१.३ स्वातन्त्र्योत्तर संस्कृत कथाएँ	८
२.० कथा शब्द का व्युत्पत्ति	१२
२.१ कथा के विभिन्न भेद	१८
३.० प्राचीन कथा और आधुनिक कथा साहित्य में वैषम्य	३०
४.० लघु कथा के विषय में आधुनिक दृष्टिकोण	३३
५.० लघु कथा साहित्य का समाजशास्त्र एवं समाजशास्त्रीय महत्त्व	३५
६.० आधुनिक संस्कृत लघु कथा साहित्य में युगीन सामाजिक- सांस्कृतिक-राजनैतिक-आर्थिक चेतना	३९
द्वितीय अध्याय- साहित्य का समाजशास्त्र एक सैद्धान्तिक विवेचन	४५-६६
१.० समाजशास्त्र की अवधारणा एवं स्वरूप	४५
२.० साहित्य और समाज का महत्त्व	४९
३.० साहित्य के समाजशास्त्रीय अध्ययन की उपादेयता	५४
४.० समाजशास्त्रीय अध्ययन का मुख्य आधार	५७
४.१ समाज	५८
४.२ राजनीति	५९
४.३ अर्थव्यवस्था	६१
४.४ धार्मिक परिवेश	६२
४.५ सांस्कृतिक चेतना	६४
तृतीय अध्याय-बीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकथा साहित्य का सामान्य परिचय	६७-१२५
१.० कथामुक्तावली	६७

२.०	संस्कृत कथा कुञ्जम्	६९
३.०	सिद्धेश्वरी वैभवम्	७२
४.०	अपराजिता	७३
५.०	कथानक वल्ली	७६
६.०	कथा सप्तकम्	७८
७.०	इक्षुगन्धा	८०
८.०	राङ्गडा	८३
९.०	दिशा विदिशा	८५
१०.०	ऊर्मिचूड़ा	९०
११.०	एकादशी	९५
१२.०	अभिनव कथा निकुञ्ज	९८
१३.०	राज कथा कुञ्जम्	१०८
१४.०	राजस्थानस्याधुनिका संस्कृतकथालेखकाः	१२२

चतुर्थ अध्याय बीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकथा साहित्य में वर्णित सामाजिक

समस्याओं का विश्लेषण

१२६-२२६

१.०	सामाजिक चेतना	१२६
२.०	परिवार	१२८
२.१	संयुक्त परिवार में विघटन की समस्या	१२९
२.२	दाम्पत्य सम्बन्ध में विघटन की समस्या	१३४
२.३	सपत्नी सम्बन्ध	१३९
२.४	परिवार में पुरुष की प्रधानता	१४२
२.५	समाज में पुत्र की अपेक्षा एवं पुत्री की उपेक्षा	१४४
२.६	पुत्री के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण	१५१
२.७	प्रणय सम्बन्ध	१५७
३.०	परिवार एवं समाज में नारी की स्थिति	१६२
३.१	कामकाजी महिलाओं की समस्या	१७४
३.१.१	कार्यशील नारी के सन्तान का परिस्थितियों से समझौता	१७८
३.२	बन्ध्या नारी की स्थिति	१७९
४.०	वैवाहिक स्तर	१८०
४.१	प्रेम विवाह	१८८
४.२	अन्तर्जातीय विवाह	१९२
४.३	विधवा विवाह	१९४

५.०	वर्णाश्रम व्यवस्था	१९६
६.०	स्वार्थपरक भावनाओं का बाहुल्य	२०३
७.०	वैश्या समस्या	२०६
८.०	धूम्रपान एवं मद्यपान की समस्या	२०८
९.०	किरायेदार की समस्या	२१५
१०.०	पाश्चात्य संस्कृति के प्रति आकर्षण	२१६
११.०	सामाजिक प्रक्रियाओं में सहयोगी प्रक्रियायें	२१९
	निष्कर्ष	२२३

पंचम अध्याय बीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकथा साहित्य में वर्णित

	राजनैतिक समस्याओं का विश्लेषण	२२७-२४१
१.०	साहित्य एवं राजनीति	२२७
२.०	राजनीति एवं समाज	२२८
३.०	राजधर्म	२२९
४.०	वर्तमान राजनैतिक स्थिति	२३२
५.०	न्याय एवं दण्ड व्यवस्था	२३५
	निष्कर्ष	२४०

षष्ठ अध्याय

बीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकथा साहित्य

में वर्णित आर्थिक समस्याओं का विश्लेषण २४२-२७०

१.०	अर्थ एवं उसका महत्त्व	२४२
२.०	आर्थिक स्थिति	२४४
३.०	अर्थ संग्रह	२४६
४.०	धन की वर्तमान में अत्यधिक महत्ता	२४७
५.०	श्रम एवं श्रमिक वर्ग	२५२
६.०	आर्थिक भ्रष्टाचार	२५५
७.०	जनसंख्या वृद्धि	२५८
८.०	यौतुक समस्या	२६०
९.०	परिवार को नारी का आर्थिक सहयोग	२६४
	निष्कर्ष	२६९

सप्तम अध्याय

बीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकथा साहित्य

में वर्णित धार्मिक रूढ़ियों का विश्लेषण २७१-२९९

१.०	धर्म का लक्षण एवं उसका स्वरूप	२७१
२.०	समाज में धर्म की आवश्यकता	२७३

३.०	परम्परागत धार्मिक रूढ़ियों की विवेकहीन स्वीकृति	२७४
४.०	ईश्वर के प्रति आस्था	२८१
५.०	पुनर्जन्म में विश्वास	२८८
६.०	कर्म सिद्धान्त का प्रतिपादन	२९१
७.०	तीर्थ यात्रा एवं दान	२९३
८.०	जन्मपत्री में विश्वास	२९६
९.०	धार्मिक विकृतियाँ	२९७
	निष्कर्ष	२९८

अष्टम अध्याय बीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकथा साहित्य

में वर्णित सांस्कृतिक परिवेश का विश्लेषण ३००-३३१

१.०	संस्कृति का अर्थ एवं स्वरूप	३००
२.०	संस्कृति और सभ्यता	३०१
३.०	रहन-सहन	३०२
४.०	भारतीय शिक्षा पद्धति	३०३
४.१	शिक्षा व्यवस्था	३०४
४.२	स्त्री शिक्षा	३०७
४.३	गुरु महिमा	३१०
४.४	शिक्षा की दुर्दशा	३१३
५.०	पुरुषार्थ	३१६
६.०	कर्तव्य परायणता	३१८
७.०	अतिथि सत्कार	३२२
८.०	मानवता	३२५
९.०	पशु प्रेम	३२८
	निष्कर्ष	३३०

उपसंहार

१.०	बीसवीं शताब्दी के लघु कथा साहित्य में आयी समस्याओं का दिग्दर्शन एवं विश्लेषण	३३२
२.०	समाज की परम्परागत मान्यताओं में आ रहे परिवर्तनों का संकेत	३३७
३.०	अध्ययन का निष्कर्ष	३३८

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची